BA Part II (H)

Paper III

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Rajnagar

Lecture III

2020-7-24 14:28

अनुसूचित जातियों की समस्याएं (Problems of Scheduled Caste) ⇒ जाति प्रथा के विकृत अभिशाप ने अनुसूचित जातियों को अनेक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और अन्य मानवीय सुविधाओं से वंचित करके अत्यंत दरिद्रतापूर्ण, घृणित और पशुवत जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य किया गया। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अनुसूचित जातियों की समस्याएं आज भी काफी गम्भीर बनी हुई हैं। इन समस्याओं को दो भागों में विभाजित करके समझा जा सकता है।

I) परम्परागत समस्याएं - अनुसूचित जातियों की परम्परागत समस्याओं का तात्पर्य उन समस्याओं से है जो स्मृतियों के समय से लेकर किसी न किसी रूप में बीसवीं शताब्दी के आरम्भ तक बनी रही। जाति-व्यवस्था के नियमों से उत्पन्न अनुसूचित जातियों की इन परम्परागत निर्योग्यताओं को सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजनीतिक जैसे चार प्रमुख भागों में.

विभाजित करके समझा जा सकता है -

1) सामाजिक समस्याएं - अनुसूचित जातियों को सवर्ण हिन्दुओं के साथ सामाजिक सम्पर्क रखने व उनके सम्मेलनों, गोष्ठियों, पंचायतों, उत्सवों आदि में भाग लेने की आज्ञा नही दी गई। इन्हें उच्च जाति के हिन्दुओं के साथ खान-पान का सम्बन्ध रखने से वंचित रखा गया। अस्पृश्यों को अन्य हिन्दुओं के द्वारा काम में लिए जाने वाले कुओं से पानी नही भरने दिया जाता, स्कूलों में पढ़ने और छात्रावासों में नही रहने दिया जाता। इन लोगों को उच्च जातियों द्वारा काम में ली जाने वाली वस्तुओं के उपयोग की भी आज्ञा नही थी। इन्हें मेलों, चौपालों, हाटों आदि में शामिल होकर अपना मनोरंजन का अधिकार भी नही दिया गया। पणिक्कर का कहना है कि सबसे विचित्र बात यह है कि स्वयं अछूत जातियों के अन्दर भी एक दूसरे से उच्च और निम्न जातियों का एक संस्तरण विकसित हो गया।

2020-7-24 14:28